

न करो निठुराई ( ९४ )

ओ मुरली वाले मन मोहन  
क्यों करते हो तुम निठुराई ।  
अब जाऊं कहां तजि शरण पिया  
नहीं और ठौर हमने पाई ॥

तैनें मुरली बजाकर खैंच लिया  
मन प्राण हमारा हाथों में  
अब ठुकराते ओ अबलायें  
कुल धर्म की रूखी बातों में  
पहिले प्रीति लगाय लुभाय लिया  
अब सेतु धर्म की दृढ़ाई ।१॥

तजि लोक लाज गृह काज सबै  
तेरी तान हमें बेचैन किया  
बनि उन्मति दौड़ी आई यहां  
अब तुमने भी वैराग लिया  
तेरा नाम दया सिन्धु वेद कहें  
यह बात भला क्यों विसराई ॥२॥

तेरी अलक जाल की फांसी में  
हम मुग्ध मृगी अब आय फंसी  
तेरी चितवन मुश्कनि जादू भरी  
प्यारी रूप छटा हिय में हुलसी  
अब अपना करि मति छोड़ि पिया  
रहूं चरण कमल सों लपटाई ॥३॥

दिया दान वचन का सत्य सिन्धू  
शरद रैन में पूरन आश करूं  
हुआ वृत सफल अब देवी का  
मिल रास ओ नृत्य विलास करूं  
रही राह निहारि जिस दिन की  
वह शरद निशा अब है आई ॥४॥

हम पति परिवार न जानती हैं  
तेरी चरण कमल की चेरी बनी  
तुम हमारे जीवन सर्वस्व हो  
बृजराज लला मेरी नीलमणी  
जैसे नीर मछली का जीवन है  
तैसे हमरो जीवन तू सुखदाई ॥५॥

तेरे नयन कमल मुख कंज पिया  
पद कमल कंज है लाल तेरा  
नवनीत से कोमल अंग सभी  
कीया कमल कुंज में तुम डेरा  
कैसे हृदय कठोर कियो तुमने  
यह बात समझ में नहीं आई ॥६॥

तुम गोपी मेंरी प्यारी हो  
तेरे सुख के लिए अवतार मेरा  
बार बार कही मधुरी बतियां  
अब निर्मम है वर्तावि तेरा  
अब अपने बृद की लाज रखो  
हम चरण कमल सों लपटाई ॥७॥